सर्वोत्तम आविष्कार

सर्वोत्तम आविष्कार

La Découverte Suprême

श्रीअरविन्द-ग्रन्थमाला

पांडीचेरी

अनुवादक और प्रकाशक : चन्द्रदीप

श्रीअरविन्द-ग्रन्थमाला

१६, र्‍यु देबासैं द रिश्मों, पांडीचेरी

16, Rue Desbassin de Richemont

Pondicherry

सम्पादक :

मोहन स्वामी वैद्य

२४ नवम्बर १९४५

[illegible]म संस्करण

१०००

मूल्य ।=)

दो शब्द

जिन दिनों श्रीमां पेरिसमें रहा करती थीं उन दिनों बहुतसे जिज्ञासु उनके पास आया करते थे और वह उनके सामने कभी-कभी आध्यात्मिक विषयोंपर प्रवचन किया करती थीं। उनमेंसे एक प्रवचन, जो सन् १९१० और १२ के बीच किसी समय किया गया था, सन् १९३७ में मूल फ्रेंच भाषामें ही पेरिससे La Découverte Suprême के नामसे प्रकाशित हुआ था। उसका प्रामाणिक अंगरेजी अनुवाद सन् १९४४ में कलकत्तेसे प्रकाशित हुआ। आज हम उसीका हिन्दी अनुवाद हिन्दी-जगत्के सामने रख रहे हैं। अनुवाद प्रधानतया मूल फ्रेंचसे ही किया गया है, तथापि अंगरेजीसे भी पर्याप्त सहायता ली गयी है।

— अनुवादक

सर्वोत्तम आविष्कार

अगर हम अपनी साधनामें सर्वांगपूर्ण उन्नति करना चाहें तो हमें सबसे पहले अपनी सचेतन सत्ताके अन्दर एक दृढ़ और शुद्ध मानसिक समन्वयकी रचना अवश्य करनी चाहिये, जो बाहरी प्रलोभनोंके आक्रमणों-से कवचकी तरह हमारी रक्षा कर सके, बिना भूले-भटके सीधे मार्गपर चलनेमें मार्ग-चिह्नकी तरह हमारी सहायता कर सके, चंचल जीवन-सागरके बीच दीपगृह-की तरह हमारे मार्गको आलोकित कर सके।

प्रत्येक मनुष्यको अपनी-अपनी प्रवृत्ति, अभिरुचि और अभीप्साके अनुसार इस मानसिक समन्वयकी रचना करनी चाहिये। पर यदि हम वास्तवमें इसे जीवन्त

और ज्वलंत बनाना चाहें तो हमें इसके केंद्रमें उस भावनाको अवश्य रखना चाहिये जो एक बुद्धिनिर्मित प्रतीक और प्रतिमूर्त्ति है उनका जो हमारी सत्ताके अन्तरतम प्रदेशमें विराजमान हैं, जो हमारे प्राण और हमारी ज्योति हैं।

विभिन्न रूपोंमें महान् शब्दोंके द्वारा वर्णित इसी भावनाकी शिक्षा प्रत्येक देश और प्रत्येक युगके महामहिम आचार्योंने दी है।

प्रत्येक व्यक्तिका 'मैं' और विश्वका विराट् 'मैं' दोनों एक ही हैं।

जो कुछ है वह सब अपने सार और तत्त्व-रूप में जब शाश्वत कालसे ही है तब भला सत्ता और उसके मूलके बीच, अपने तथा अपने आदि-स्रोतके बीच हम विभेद क्यों मानें ?

प्राचीन लोगोंका यह कथन ठीक ही था कि "हम और हमारा मूल, हम और हमारे भगवान् एक हैं।"

और इस एकत्वको अल्पाधिक घनिष्ठ और अन्तरंग एक साधारण मिलन-संबंधमात्र कदापि नहीं समझना चाहिये, बल्कि इसे वास्तविक तादात्म्य समझना चाहिये।

परन्तु भगवान्को खोजनेवाला मनुष्य जब धीरे-धीरे चेतनाके दुर्गम शिखरकी ओर ऊपर चढ़नेका प्रयास करता है तब वह यह भूल जाता है कि उसकी समस्त ज्ञान-गरिमा, उसकी समस्त संबोधि उसे इस अनन्तके अन्दर एक पग भी आगे नहीं ले जा सकती; और वह यह भी नहीं जानता कि जो कुछ वह पाना चाहता है, जिसे वह अपनेसे इतनी दूर समझता है, वह उसीके अन्दर विद्यमान है।

और भला वह तबतक उस मूल स्रोतके विषय-

में कुछ भी कैसे जान सकता है जबतक वह स्वयं अपने अन्दर ही उसका आविष्कार नहीं कर लेता ?

जब मनुष्य अपने-आपको जानता है, अपने-आपको पहचानना सीख लेता है तभी वह यह सर्वोत्तम आविष्कार कर सकता है और आश्चर्यचकित होकर बाइबिलवर्णित कुलवृद्धकी तरह यह कह सकता है : "अरे, यहीं तो है भगवान्‌का आवास, और मुझे इसका पतातक न था !"

इस कारण समस्त भौतिक जगत्‌की सृष्टि करनेवाले इस महान् विचारको हमें व्यक्त करना ही होगा, समस्त आकाश और समस्त पृथ्वीको परिव्याप्त करनेवाली इस वाणीको सबके कानोंतक पहुंचाना ही होगा : "मैं प्रत्येक वस्तुके अन्दर और प्रत्येक जीवके अन्दर विद्यमान हूं ।"

जब सब लोग इस बातको जान जायेंगे तब महान्

रूपान्तरका देवनिर्दिष्ट दिन बहुत समीप आ जायगा। जब जड़-तत्त्वके प्रत्येक अणु-परमाणुके अन्दर मनुष्य उन भगवान्‌की इच्छाको, जो इसके अन्दर विराजमान भी हैं, देख पायेगा, जब वह प्रत्येक प्राणीके अन्दर भगवान्‌के ही एक रूप-विशेषकी झलक देख सकेगा, जब वह अपने भ्राता प्रत्येक मनुष्यके अन्दर भगवान्‌को देखना सीख लेगा तब उषाका उदय होगा और वह समस्त अंधकार, असत्य, अज्ञान, दोष-त्रुटि और दुःख-तापको दूर भगा देगी जो अभी समूची पृथ्वीको आक्रान्त किये हुए हैं। कारण "समस्त प्रकृति दुःख भोगती और कराहती हुई यह प्रतीक्षा कर रही है कि भगवान्‌के पुत्र प्रकट हों।"

वास्तवमें यही है केन्द्रीय विचार, वह विचार जिसके अन्दर अन्य सभी विचार समाविष्ट हैं, जिसे नित्य हमारी स्मृतिमें उस सूर्यकी भांति उपस्थित रहना चाहिये जो समस्त जीव-जगत्‌को आलोकित करता है।

यही कारण है कि आज मैं तुम लोगोंको इसे स्मरण करा रही हूं। कारण, अगर हम एक अत्यन्त दुर्लभ रत्नके समान, एक अत्यन्त बहुमूल्य धनके समान इस विचारको अपने हृदयके अन्दर रखकर अपने पथपर अग्रसर हों, अगर हम इसे अपने अन्दर ज्योति प्रदान करनेका, रूपान्तर सिद्ध करनेका कार्य करने दें तो हम देखेंगे कि यह प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तुके केन्द्र-स्थलमें जीता-जागता हुआ विद्यमान है, और फिर इसीके अन्दर हम समस्त विश्वके आश्चर्यमय एकत्वको भी अनुभव करेंगे।

तब हम यह अच्छी तरह समझ सकेंगे कि कितनी व्यर्थ और बालोचित हैं हमारी तुच्छ तृप्तियां, हमारे मूर्खतापूर्ण वाद-विवाद, हमारे हीन आवेग, हमारा अज्ञ-अंध क्रोध। तब हम देखेंगे कि हमारी छोटी-छोटी दुर्बलताएं दूर हो रही हैं, हमारे ससीम व्यक्तित्वके,

हमारे निर्बोध अहंकारके अन्तिम किले भूमिसात् हो रहे हैं। हम यह अनुभव करने लगेंगे कि सच्ची आध्यात्मिकता-का एक महान् प्रवाह हमें बहाये ले जा रहा है, जो हमें अपने सीमित ढांचेसे, अपने संकीर्ण घेरेमे एकदम बाहर निकाल ले जायगा।

व्यक्तिगत 'मैं' और विश्वगत 'मैं' दोनों एक हैं; प्रत्येक जगत्, प्रत्येक जीव, प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक अणु-परमाणुके अन्दर भगवान् विराजमान हैं, और यह मनुष्य का भगवत्प्रदत्त कार्य है कि वह उन्हें अभिव्यक्त करे।

इस कार्यको पूरा करनेके लिये यह बहुत ही आवश्यक है कि मनुष्य सबसे पहले अपने अन्दर भगवान्की इस उपस्थितिके विषयमें सचेतन हो। इस सचेतनताको प्राप्त करनेके लिये कुछ लोगोंको सच्ची उम्मेदवारी करनी पड़ती है अर्थात् उन्हें पर्याप्त साधना करनेकी आवश्यकता होती है; क्योंकि उनकी अहंकार-

मयी सत्ता अत्यन्त अभिभूत करनेवाली, अत्यन्त अचल-अटल, अत्यन्त कठोर होती है और उन्हें उसके साथ बड़ा ही लम्बा और दुःखदायी युद्ध करना पड़ता है। परंतु, इसके विपरीत, कुछ दूसरे लोग ऐसे होते हैं जो स्वभावसे ही अधिक नैर्व्यक्तिक, अधिक नमनीय, अधिक अध्यात्मभावापन्न होनेके कारण बड़ी सरलतासे अपनी सत्ताके अक्षय दिव्य स्रोतके संस्पर्शमें आ जाते हैं। किन्तु हमें यह याद रखना चाहिये कि ऐसे लोगोंके लिये भी यह परम आवश्यक है कि वे अपनी प्रकृति-को अनुकूल बनानेके लिये, रूपान्तरित करनेके लिये नित्य-निरन्तर विधिपूर्वक प्रयास करते रहें जिसमें उनके भीतर ऐसी कोई भी चीज न रह जाय जो फिरसे जगकर इस विशुद्ध ज्योतिकी जगमगाहटको धूमिल बना दे।

परन्तु किस तरह हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाता है जब हम इस गभीर चेतनाको प्राप्त कर लेते

हैं ! किस तरह हमारी समझकी सीमा फैल जाती है, किस तरह हमारे हृदयकी उदारता बढ़ जाती है !

इसी विषयको ध्यानमें रखकर एक ज्ञानीने कहा है :

“ मैं चाहता हूं कि हममेंसे प्रत्येक मनुष्य उस अवस्थाको प्राप्त हो जाय जहांसे वह उन अन्तरस्थ भगवान्‌को देख सके जो सबसे नीच मनुष्योंके अन्दर भी निवास करते हैं; और उन नीच मनुष्योंसे घृणा करनेके बदले हम यह कहें : “प्रकट हो, ऐ जाज्वल्यमान पुरुष ! तू, तू तो सदा शुद्ध है, तू न जन्म जानता है न मृत्यु, प्रकट हो ऐ सर्वशक्तिमान्! और अपने स्वभावको अभिव्यक्त कर ।”

आओ ! हम इस परम सुन्दर वाणीके अनुसार अपने जीवनको बनायें और तब हम देखेंगे कि हमारे चारों ओर सब कुछ मानो किसी चमत्कारके द्वारा रूपान्तरित हो रहा है ।

यही है यथार्थ प्रेमका, सचेतन और सूक्ष्मदर्शी प्रेमका भाव, उस प्रेमका भाव जो बाह्य रूपोंके परे जाकर देखना जानता है, शब्दोंके परे जाकर समझना जानता है, और जो सब प्रकारकी विघ्न-बाधाओंको पार करता हुआ सब वस्तुओं और सब जीवोंके गभीरतम प्रदेशके साथ निरन्तर अपना मिलन-संबंध बनाये रखता है।

भला कितनासा मूल्य है हमारे आवेगों और कामनाओंका, हमारी वेदनाओं और उग्रताओंका, हमारे दुःखों और संघर्षोंका, हमारे जीवनसे संबंधित उन सभी विपर्ययोंका जिन्हें हमारी अव्यवस्थित कल्पना-शक्ति अत्यधिक रंग-बिरंगे रूपोंमें हमारे सामने उपस्थित करती है—कितनासा मूल्य है इन सबका उस महान्, उदात्त, दिव्य प्रेमके सामने जो हमारी सत्ताके अन्तरतम प्रदेशमें रहते हुए हमारे ऊपर झुका रहता है, हमारी दुर्बलताओंको सहन करता है, हमारी भूलोंको सुधारता है, हमारे

घावोंको भरता है, हमारी सम्पूर्ण सत्ताको अपनी नवजीवनदायिनी धाराओंसे नहलाता है?

कारण अन्तरस्थ भगवान् न तो दबाव डालते हैं, न कोई मांग करते हैं, न भय दिखाते हैं; वह अपने-आपको उत्सर्ग करते हैं, अपने-आपको दे देते हैं; वह प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तुकी हृदयगुहामें आत्मगोपन करते हैं, आत्मविस्मृत हो जाते हैं; वह न तो दोष देते हैं, न दोष-गुणका विचार करते हैं, न श्राप देते हैं, न अपराधी ठहराते हैं; बल्कि वह बिना बाध्य किये पूर्णत्व प्रदान करनेमें, बिना खोटी-खरी सुनाये भूल सुधारनेमें, बिना धैर्य खोये उत्साह दिलानेमें, प्रत्येक मनुष्यको उसकी ग्रहण-शक्तिके अनुसार सभी सम्पदाओंसे भरपूर कर देनेमें निरन्तर लगे रहते हैं; वह माता हैं जिनका प्रेम जन्म देता और पालन-पोषण करता है, देख-भाल करता और सुरक्षित

रखता है, परामर्श और सान्त्वना देता है; वह सबको जानते हैं इसलिये सबको सहारा देते हैं, वह सबको क्षमा करते हैं, वह सबके लिये आशा रखते और सबको तैयार करते हैं; वह सब कुछ अपने अन्दर लिये हुए हैं इसलिये उनके पास ऐसा कुछ भी नहीं जो सबका न हो; वह सबके ऊपर राज्य करते हैं इस-लिये वह सबके सेवक हैं; अतएव जो लोग, बड़े हों या छोटे, उनके साथ राजा और उनके अन्दर देवता बनना चाहते हैं वे, उन्हींकी तरह, स्वेच्छाचारी शासक नहीं प्रत्युत अपने भाइयोंके सेवक बन जाते हैं।

कितना सुन्दर है सेवकका यह विनयपूर्ण कार्य, उन लोगोंका कार्य जो सबके अन्दर विराजमान भगवान्-को, सब वस्तुओंको जीवन देनेवाले भागवत प्रेमको अभिव्यक्त करनेवाले, उनकी महिमाकी घोषणा करने-वाले हो गये हैं........।

और जबतक हम उनके दृष्टान्तका अनुसरण नहीं कर पाते और उनकी तरह सच्चे सेवक नहीं बन जाते तबतक आओ, हम भागवत प्रेमको अपने अन्दर प्रवेश करने दें, उसे अपनी प्रकृतिको रूपान्तरित करने दें, बिना कुछ बचाये सम्पूर्ण उसे अर्पित कर दें अपने इस अद्भुत यन्त्रको, जड़-तत्त्वसे रचित अपने इस शरीरको। वह कर्मके प्रत्येक क्षेत्रमें इसका अधिक-से-अधिक सदुपयोग करेगा।

इस पूर्ण आत्मोत्सर्गकी अवस्थाको प्राप्त करनेके लिये सभी उपाय अच्छे हैं, सभी पद्धतियां अपना-अपना मूल्य रखती हैं। पर जो अत्यन्त अनिवार्य बात है वह है इस उद्देश्यसिद्धिके सङ्कल्पको जागृत रखकर नित्य-निरन्तर प्रयास करते रहना। क्योंकि इसके रहनेपर, हम जो कुछ अध्ययन करते हैं, जो कुछ कार्य करते हैं, जितने मनुष्योंसे मिलते-जुलते हैं वे सबके सब हमें

इस मार्गपर चलनेके लिये कुछ-न-कुछ संकेत देते हैं, सहायता करते हैं और प्रकाश दिखाते हैं।

अपनी बात पूरी करनेसे पहले अब मैं कुछ पृष्ठ उन लोगोंके लिये यहां जोड़ देना चाहती हूं जो बाह्यतः निष्फल प्रतीत होनेवाले बहुतसे प्रयत्न अबतक कर चुके हैं, जो पथमें आनेवाले फंदोंको जान चुके हैं और अपनी दुर्बलताकी मात्राको तौल चुके हैं, जो विश्वास तथा साहस खोनेकी अवस्थातक पहुंच चुके हैं। इस प्रकार जो लोग आर्त्त हो रहे हैं उनके हृदयोंमें पुनः आशाका संचार करनेके लिये ये पृष्ठ एक आध्यात्मिक साधकके द्वारा उस समय लिखे गये थे जिस समय सब प्रकारकी कठिन परीक्षाएं पवित्र करनेवाली आगकी लपटोंकी तरह उसके ऊपर टूटी पड़ती थीं।

* *

*

तुम लोग जो थके-मांदे, अवसन्न और आहत हो रहे हो, तुम लोग जो गिर रहे हो, जो संभवतः अपनेको पराजित समझ रहे हो, सुनो एक मित्रकी वाणी; वह तुम्हारे कष्टोंको जानता है, वह उन्हें भोग चुका है, वह तुम्हारी ही तरह पृथ्वीके सभी दुःख-ताप झेल चुका है, वह तुम्हारे ही समान दिनके कष्टदायी बोझ वहन करता हुआ कितने ही रेगिस्तान पार कर चुका है, वह जानता है कि भूख और प्यास क्या हैं, निर्जन और परित्यक्त अवस्थाएं क्या हैं और सबसे अधिक निष्ठुर जो हृदयकी रिक्तता है वह क्या है; हाय! वह यह भी जानता है कि संदेहकी घड़ियां क्या हैं; यह भी समझता है कि भूलें, त्रुटियां, दुविधाएं क्या हैं, सब प्रकारकी दुर्बलताएं क्या हैं।

परन्तु वह तुमसे कहता है : साहस रखो ! सुनो उस शिक्षाभरी वाणीको जिसे प्रत्येक दिन सवेरे उदीयमान सूर्य अपनी प्रथम किरणोंके साथ इस पृथ्वीपर ले आता है। वह बड़ी आशाकी वाणी है, सान्त्वनाका संदेश है।

तुम लोग, जो अपने दु:ख-तापकी अवधि और अपनी वेदनाओंका परिणाम समझनेका साहस भी नहीं रखते और इस कारण रो रहे हो, यंत्रणा भोग रहे हो, भयसे कांप रहे हो, देखो; ऐसी कोई रात नहीं जिसके अन्तमें उषाका उदय न हो और जब अंधकार घना हो जाता है तभी उषा निकलनेकी तैयारी करती है; ऐसा कोई कुहासा नहीं जिसे सूर्य दूर न कर सके, ऐसा कोई बादल नहीं जिसे वह सुनहला न बना सके, ऐसा कोई आंसू नहीं जिसे वह एक दिन सुखा न सके, ऐसा कोई तूफान नहीं जिसके अन्तमें उसका विजय-धनु

न चमचमा उठे, ऐसी कोई बर्फ नहीं जिसे वह न पिघला सके, ऐसा कोई शीत नहीं जिसे वह जगमगाते हुए वसन्तमें न परिणत कर सके।

और वैसे ही तुम्हारे लिये भी ऐसी कोई दुरवस्था नहीं जो अपने ही अनुपातमें गौरव न प्रदान कर सके, ऐसा कोई दुःख-क्लेश नहीं जो आनन्दमें रूपान्तरित न हो सके, ऐसी कोई पराजय नहीं जो विजयका रूप न धारण कर सके, ऐसा कोई पतन नहीं जो उच्चतर उत्थानमें न परिणत हो सके, ऐसी कोई निर्जनता नहीं जो जनबहुल जीवन-केन्द्रमें परिवर्तित न हो सके, ऐसी कोई असंगति नहीं जो सुसंगतिमें पर्यवसित न हो सके; कभी-कभी दो मनोंकी अनबन ही दो हृदयोंको मिलनोन्मुख होनेके लिये बाध्य करती है; थोड़ेमें कह सकते हैं कि ऐसी कोई असीम दुर्बलता नहीं जो शक्तिमें न परिवर्तित हो सके।

और यहांतक कि चरम दुर्बलताके अन्दर ही सर्व-शक्तिमान् भगवान् आत्मप्रकाश करना पसन्द करते हैं!

सुनो, मेरे प्यारे बच्चे, आज तुम अपनेको इतने भग्न-हृदय समझते हो, संभवतः इतने पतित अनुभव करते हो, तुम्हारे पास अब कुछ भी नहीं रहा, अपनी दरिद्रताको ढकनेके लिये, अपने गर्वका पोषण करनेके लिये अब कुछ भी न रहा, पर फिर भी इतने अधिक महान् तुम पहले कभी न थे! ऊंचे शिखरोंके कितना समीप वह होता है जो गहराइयोंके अन्दर जग जाता है, क्योंकि गहराई जितनी अधिक बढ़ती जाती है उतनी ही अधिक ऊंचाई भी हमारे सामने प्रकट होती जाती है!

क्या तुम नहीं जानते कि इस विश्वसृष्टिकी महत्तम शक्तियां अपनेको आच्छादित करनेके लिये जड़-तत्त्वके अत्यन्त अस्वच्छ पर्दोंको ढूंढ़ा करती हैं? ओह! कितना भव्य है वह विवाहोत्सव परम प्रेम और

अत्यन्त तमोमयी नमनीय मिट्टीका, अन्धकारकी कामनाके साथ अत्यन्त ऐश्वर्यमय प्रकाशका!

यदि अग्निपरीक्षा या दोष-त्रुटिने तुम्हें पछाड़ दिया हो, यदि तुम दुःख-दर्दके गर्त्तमें डूब गये हो, तो तुम जरा भी शोक मत करो, क्योंकि वहींपर भागवत करुणा और परम आशीर्वाद तुम्हें प्राप्त हो सकते हैं! तुम शुद्ध करनेवाले कष्टोंकी आगमें तपाये जा चुके हो, इसलिये अब तुम्हारे लिये तो केवल गौरवमय आरोहण-ही-आरोहण है।

क्या तुम निर्जन मरुभूमिमें आ पड़े हो? बहुत अच्छा, कान लगाकर सुनो नीरवताकी वाणी। बाहरी प्रशंसा और जयजयकारकी ध्वनिने अबतक तुम्हारे कानोंको रंजित किया है, पर नीरवताकी वाणी अब तुम्हारे अन्दर गभीरताओंकी प्रतिध्वनि, दिव्य

सामंजस्योंका संगीत जगाती हुई तुम्हारे अन्तरात्माको रंजित करेगी !

क्या तुम गहन रात्रिमें चल रहे हो ? बहुत अच्छा, एकत्रित करो रात्रिके अमूल्य वैभव। समुज्ज्वल सूर्यालोक बुद्धिके मार्गोंको प्रकाशित करता है, पर रात्रि-की स्वच्छ प्रभामें पूर्णताका गुप्त पथ दिखायी देता है, आध्यात्मिक सम्पदाओंका रहस्य खुल जाता है।

क्या तुम रिक्तताके मार्गका अनुसरण कर रहे हो ? वह तो प्रचुरताकी ओर ले जाता है। जब तुम्हारे पास कुछ भी नहीं रह जायगा तब सब कुछ तुम्हें मिल जायगा। क्योंकि जो सच्चे और सीधे-सादे होते हैं उनके लिये सदा ही सबसे बुरेके अन्दरसे सबसे भला निकल आता है।

प्रत्येक दाना जो पृथ्वीमें बोया जाता है वह हजारों दाने उत्पन्न करता है। दुःख-तापके पंखोंका प्रत्येक

स्पन्दन गौरवकी ओर ले जानेवाली उड़ान बन सकता है।

और जब शत्रु मनुष्यके पीछे हाथ धोकर पड़ जाता है तब वह उसे नष्ट करनेके लिये जो कुछ करता है वही उसे महान् बना देता है।

सुनो समस्त भुवनोंकी कहानी, देखो : प्रचंड शत्रु विजयी होता हुआ दिखायी देता है। वह ज्योतिकी सत्ताओंको रात्रिके अन्दर फेंक देता है और रात तारोंसे भर जाती है। वह विश्व-क्रियाके ऊपर क्रोधके साथ टूट पड़ता है, वह आदिमंडलके अखंड साम्राज्यपर आघात करता है, उसके समन्वयको छिन्न-भिन्न करता है, उसे खंड-विखंड कर डालता है, उसकी धूलको अनन्तकी चारों दिशाओंमें बखेर देता है, और वह देखो, वह धूल सुनहले बीजोंमें परिणत हो जाती है, अनन्तको उर्वर बनाती और विभिन्न भुवनोंसे भर देती है जो अब अपने शाश्वत केन्द्रके चारों ओर, एक विशालतर

कक्षाके अन्दर घूमते रहेंगे। इस तरह यह विभाजन ही उत्पन्न करता है एक समृद्धतर और गभीरतर एकत्व, और भौतिक जगत्के धरातलोंको बहुत अधिक बढ़ाकर उस साम्राज्यको और भी विशाल बना देता है जिसे वह विभाजन ध्वंस ही करना चाहता था।

निस्संदेह असीमके वक्षःस्थलपर झूलते हुए आदिमंडलका गान अत्यन्त सुन्दर होगा; पर उससे कहीं अधिक सुन्दर और विजयोल्लासपूर्ण है ग्रह-नक्षत्रोंका ऐक्यतान, समस्त भुवनोंकी नाद-ध्वनि, विराट् समन्वित सुर-वितान, जो सभी आकाशोंको शाश्वत विजय-मंत्रसे गुंजायमान कर रहे हैं।

और सुनो: मनुष्यकी अवस्था उस समय सबसे अधिक संकटापन्न हो गयी जिस समय इस पृथ्वीपर वह अपने दिव्य उद्गमसे विच्छिन्न हो गया। उसके ऊपर तो फैली हुई थी बलपूर्वक अधिकार जमानेवाले शत्रुकी

राज्यसीमा और उसके क्षितिज-मंडलकी ड्योढ़ियोंपर चौकसी कर रहे थे ज्वालामयी खड्गोंसे सुसज्जित द्वारपाल। उस समय, चूंकि मनुष्य अपने जीवनके आदि-स्रोतकी ओर ऊपर उठनेमें अब एकदम असमर्थ था, इसलिये वह स्रोत उसके अन्दरसे ही फूट निकला; चूंकि वह ऊपरकी ज्योतिको अब ग्रहण करनेमें असमर्थ था, इसलिये वह ज्योति उसकी सत्ताके केंद्रमें ही प्रज्वलित हो उठी; चूंकि वह अब परात्पर प्रेमके साथ सम्बन्ध बनाये रखनेमें असमर्थ था, इसलिये उस प्रेमने ही आत्माहुति दे दी, अपने-आपको समर्पित कर दिया, प्रत्येक पार्थिव सत्ताको, प्रत्येक मानवीय अहंकारको अपना निवास-स्थान, अपना पवित्र मन्दिर बना लिया।

इसी कारण इस अवज्ञात पर उर्वर, परित्यक्त पर परम धन्य जड़तत्त्वके एक-एक परमाणुके अन्दर विद्यमान है एक-एक दिव्य भाव, एक-एक सत्ताके

अन्दर विराजमान हैं स्वयं भगवान्। और यदि विश्व-भरमें कोई भी मनुष्य-जैसा दीन-दुर्बल नहीं है तो वैसे ही कोई भी उसके जैसा दिव्य भी नहीं है!

सत्य है, सत्य है, दीनता-हीनताके अन्दरसे ही उत्पन्न होता है महान् गौरव!

हमारी अन्यान्य पुस्तकें

गीताप्रबन्ध (प्रथम भाग)	....	....	४॥)
माता	....	....	॥।)
योगप्रदीप	....	....	॥।)
योगके आधार	....	....	२।)
इस जगत्‌की पहेली	....	....	१)
हमारा योग और उसके उद्देश्य	....	....	॥)
जगन्नाथका रथ	....	....	॥)
उत्तरपाड़ा-अभिभाषण	....	....	।)
मातृवाणी	....	....	२।)
श्रीअरविन्द और उनका योग	....	....	॥=)

श्रीअरविन्द-ग्रन्थमाला

16, Rue Desbassin de Richemont

Pondicherry

श्रीअरविन्द आश्रम मुद्रणालय, पांडीचेरी